शबरी ब्राह्मणी थी या शुद्र थी शबरी का झूठे बेर खिलाने का खण्ड

हमने भी पर्याप्त जंगली बेर खाये हैं, लेकिन चख के पता कभी नहीं करना पड़ा , रंग देख कर ही पता चल जाता है कि कैसा होगा ।

हो सकता है त्रेतायुग में कईं प्रजातियॉ रही होंगी, लेकिन प्रजाति का स्वाद पता करने के लिये तो स्थालीपुलाकन्याय से एक बार का एक ही बेर पर्याप्त है । वो भी उस स्त्री के लिये जिसने पूरा जीवन जंगल में ही काटा हो !

ये क्या कि मुंह के जूठे बेर काट काट के अतिथि देवता को खिलाये जायें ? चलो दुर्जनतोषन्याय से हम तो फिर भी आपका कहा मान लेते हैं वो मतंगशिष्या जंगली गंवार थी, पर क्या राम भी अनपढ़ थे क्या , जो किसी का जूठा खा लें ? वो राम , जो गुरुगृह गये पढ़न रघुराई । अन्तकाल विद्या सब पाई ।।

नोच्छिष्टं कस्यचिद् दद्यात् ।

उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ।

श्रुति स्मृति का उल्लंघन करने वाला न तो मेरा भक्त है, न वैष्णव , ऐसा कहने वाले भगवान् ने स्वयं श्रौत- स्मार्ताचार को ताक पर रखकर भक्ति के नाम पर

जूठे बेर खा लिये - कितना झूठ फैला दिया गया ।

।। श्रीरामस्य जयोऽस्तु ।।

पूज्यधर्मसम्राटमहाभाग इस प्रसंग में कहते है कि

“कई लोगों ने लिखा है कि वे जूठे फल थे जिन्हें शबरी ने भगवान राम को दिया था , वस्तुत: उसका अभिप्राय यही है कि वह खठ्ठे मीठे का परीक्षण करके उसी वृक्ष या उसी ढँग के फलों को संग्रह करती है।

बलरामदास के वृत्तान्त के अनुसार वह अपने पति के साथ राम से मिलती है। उसके अनुसार राम उन फलों को नहीं खाते जिनमें दॉंतो के निशान नहीं है। परन्तु इसका तात्पर्य शबरी की भक्ति की प्रशंसा मे है क्योंकि जब

“नोच्छिष्टं कस्यचिद् दद्यात् नाद्याच्चैव तथान्तरा”(मनु॰२।५६)

मनु महाराज के अनुसार-किसी सामान्य व्यक्ति के लिए भी उच्छिष्ट देना निषिद्ध है तो ब्राह्मण , देवता,राजा , ईश्वर के लिए तो उच्छिष्ट अन्न या फल का प्रदान करना परम निषिद्ध ही है।

अत: “प्रमाणविरुद्ध आख्यायिका गुणवाद होकर भक्ति की प्रशंसा में ही पर्यवसित होती है”।भक्तमाल की प्रियादासटीका में कहा है कि ऋषियों ने एक कृमियों से भरे सरोवर को स्वच्छ करने की प्रार्थना भगवान् श्रीराम से की तो भगवान् श्रीराम ने शबरी के स्पर्श से सरोवर पवित्र होने की बात कही है ।

शबरी को सत्सम्प्रदाय में ब्राह्मणवर्ण का ही माना जाता है।

शबरी शूद्रा नहीं थी

शबरी जी कदापि शूद्रा न थीं ~

(१) आक्षेप : परिचारिणी थीं, अतः शूद्रा हैं -

समाधान : परिचारिणी शब्द के आधार पर शूद्रा समझे जाने पर राम के अर्घ्य पाद्य गन्धानुलेपन विशेषणरूप आतिथ्य सत्कार तथा मतंगमुनि-आश्रमवास आदि से विरोध होगा ।

छान्दोग्योपनिषद् की जबाला भी परिचारिणी थीं (चरन्ती परिचारिणी यौवने) , किन्तु त्रिकालदर्शी महर्षि गौतम उनके पुत्र की परीक्षा करके ब्राह्मण ही बताते हैं और समिधं सोम्याऽऽहर कहकर उनका उपनयन संस्कार भी करते हैं । जाबाल मुनि के लिये ब्रह्मवैवर्तपुराण में वेदाङ्गवेदज्ञः विशेषण है, ये विशेषण उनको शूद्र समझने वालों का भी भ्रान्तिहरण कर रहा है ।

परिचर्या का अभिप्राय उपासना (सेवा) है । सेवा शूद्र का स्वाभाविक कर्म अवश्य है , किन्तु शूद्र ही सेवाचित्त वाला हो सकता है , ये नियम नहीं है । लोक में ब्राह्मणी भी अपने पति की , अतिथि की , विदुषी ब्राह्मणियों की , सन्तों की , ईश्वर की सेवा करती है ।

(२) आक्षेप : राम के चरण पकड़तीं हैं ,अतः शूद्रा हैं -

समाधान : लोकाचार की दृष्टि से ब्राह्मणी होकर क्षत्रिय अतिथि के चरण पकड़ने का आचार ब्राह्मणी न होने का भले ही पोषण करे , किन्तु ब्राह्मणी नहीं थीं, तो शूद्रा ही थीं , ऐसा भी एकान्त निर्णय नहीं करता , क्योंकि राम शुद्ध क्षत्रिय जाति के थे , ऐसी स्थिति में अनुलोम संकर क्षत्रिय , वैश्य आदि

जातियों को भी चरण पकड़ने का अवकाश प्राप्त है । हीनजातिसमुद्भवा, अधमजन्मा विशेषणों का समाधान पूर्व वक्तव्य में हम कर आये हैं ।

अकथित अंश से असम्भव होने की सिद्धि नहीं हुआ करती , फलतः राम द्वारा नमन करने का प्रसंग प्राप्त न होना , उनके द्वारा नमन न करने की भी सिद्धि नहीं करता ।

शबरी जी के ब्राह्मणी पक्ष में - // दृष्ट्वा तु तदा सिद्धा समुत्थाय कृतांजलिः । पादौ जग्राह..// यहाॅ चरण पकड़ने वाली शबरी के लिये #सिद्धा विशेषण उनके ब्राह्मणीपक्ष की रक्षा कर रहा है । क्योंकि लोक में सिद्ध प्राणियों में आचारमर्यादा का अतिरेक दीखने पर भी उनमें दोषप्राप्ति नहीं होती । (समरथ को नहिं दोष गोंसाई। रवि पावक सुरसरि की नाई।।) । वे मतंग मुनि की शिष्या रहीं , उनके आश्रम में वास करतीं थीं , वहीं उन्होंने तपस्या साधना की (जैसा कि राम के तपस्या , आहारादि विषयक प्रश्नों से स्पष्ट है) अतः शूद्रा नहीं कहा जा सकता ।

शबरी मीमांसादर्शन के भाष्यकार श्रीशबराचार्य के सदृश ब्राह्मण वर्ण की थी। न कि शबर जाति की।

शबरी जी : शंका समाधान ----

अध्यात्म रामायण में शबरी जी के विषय में दो विशेषण हैं -

(१) हीनजातिसमुद्भवा

(२) अधमजन्मा

और शबरी के आचारकर्म के भी दो ध्यातव्य विशेषण हैं -

(१) अर्घ्यादिभिरादृता

(२) सुगन्धैः सानुलेपनैः (सम्पूज्य)

अर्थात् शबरी हीन जाति में पैदा हुईं थीं , वे अधमजन्मा थीं और उन्होंने अर्घ्य, पाद्य से पूजन करके भगवान् राम को तिलक भी लगाया ।

अब जो लोग शबरी को शूद्रा समझते हैं , उनका विरोध अर्घ्य, तिलकादि पूजन कर देते हैं , क्योंकि शूद्रा स्त्री को क्षत्रिय को अर्घ्य , पाद्य देने और स्पर्श करते हुए गन्ध लेपन करने का कितना शास्त्रीय अधिकार है , ये सर्वविदित है ।

ऐसे में प्रश्न ये है कि फिर शबरी जी के लिये प्रयुक्त दो जातिपरक विशेषणों का क्या भाव है ? इसका समाधान यह है कि शबरी जी के उक्त दो विशेषण या तो उनकी स्त्री जाति होने के कारण ही प्रयुक्त हुए हैं (ब्राह्मणी पक्ष में) क्योंकि जाति शब्द केवल वर्णगत ही नहीं प्रयोग हुआ करता , वरन् योनिगत भी प्रयुक्त होता है , जैसे - मनुष्य जाति , पशु जाति , पक्षी जाति , स्त्री जाति , पुरुष जाति आदि । पुरुष जाति के सापेक्ष स्त्री जाति के अवर होने के कारण ही उक्त दो विशेषणों का होना संगत है । शास्त्रानुसार स्त्री जाति को पापयोनि कहा गया है । (मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः । स्त्रियो वैश्यस्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ।।) अतः शबरी जी का स्वयं के स्त्री जाति होने के कारण ही स्वयं को हीनजातिसमुद्भवा कहा गया । यही संगत है ।

तभी तो गोस्वामी जी ने शबरीमुख से कहलवाया भी है - अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह मंह मैं मतिमन्द अघारी ।।

अथवा क्षत्रिय जाति से अवर जाति - अनुलोम संकर क्षत्रिय, वैश्य जाति आदि के कारण प्रयुक्त हुए ।

श्री धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज ने रामायण मीमांसा ग्रन्थ में शबरी जी को ब्राह्मणी बताया है ।

कृतातिथ्य रघुश्रेष्ठम् - शबरी जी ने रघुकुल के राम चन्द्र का आतिथ्य किया था । कहा जाता है , भरत के अनुमोदन पर गिरि काननरूप अरण्यभाग का शासन राम ही कर रहे थे । राजा आतिथ्य का अधिकारी है । ऐसी स्थिति में शबरी जी का आचार शास्त्रोचित ही था ।

श्रीरामभक्ता शबरी का जातिनिर्णय पण्डित गङ्गाधर पाठक ' मैथिल ' (श्रीरामजन्मभूमिशिलापूजनाचार्य)

श्रीरामभक्ता शबरी भीलनी नहीं , ब्राह्मणी थी । धर्मशास्त्रों की परम्परा से सर्वथा अनभिज्ञ या राग - द्वेषवशात् बहुत से अप्रामाणिक लेखक , अन्त्यजोद्धारक एवं स्वयम्भू धर्मोपदेशकगण महाशय कुछ कल्पित कविता कहानी के माध्यम से बड़े ही समारोह के साथ श्रीरामभक्ता तपस्विनी ब्राह्मणी शबरी को शवरजाति की शूद्रा सिद्ध करके समाज में प्रसारित करते आ रहे हैं , जिस भ्रान्ति को दूर करने के लिये अनिवार्यरूपेण धर्मशास्त्रोक्त विचार करना अत्यन्त अपेक्षित है । इस असत्प्रचार में कुछ पुराने भक्तों की एतद्विषयक भ्रान्तपंक्तियाँ भी आगे होकर काम कर रही हैं । श्रीरामभक्ता शबरी का ' शबरी ' नाम भी एक कारण हो जाता है । ' शवरी ' शवरजाति की भीलनी को कहा जाता है , जो अन्त्यजों में परिगणित है ; इस कारण भी ऐसा भ्रम प्रवाद चला आ रहा है । इस भ्रम के निवारण के लिये मौलिक आप्त इतिहास का अन्वेषण आवश्यक है । यथार्थ की अपेक्षा रखनेवाले सुधी पाठकगण सर्वप्रकार के छल - प्रपञ्च का परित्याग करके बड़ी सावधानी से प्रत्येक तथ्यों का मनन करेंगे

तो श्रेयस्कर होगा । तपोधना ' शबरी ' श्रीराम की श्रेष्ठ भक्ता थी , अतः वास्तविकता को परखने हेतु श्रीराम से सम्बन्धित साहित्येतिहास का परिशीलन अपेक्षित है । भगवान् श्रीराम एवं उनके अवतारकालीन पात्रों के ऐतिहासिक यथार्थों को समझने के लिये श्रीसीतारामकालिक ' श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण ' ही सर्वसम्मत और सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है । तदुत्तरकाल के जितने भी सपरिकर श्रीसीतारामचरित्र के प्रतिपादक ग्रन्थ हैं , वे सभी श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के ही उपजीवक हैं । श्रीमद्वाल्मीकिरामायण ही अन्य सभी श्रीरामचरित्रपरक साहित्यों का उपजीव्य है । श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणोक्त सैद्धान्तिक रामकथाओं से भिन्न प्रतिपादन सनातनपरम्परा में मान्य नहीं है । श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण या इनके महनीय भाष्यकारों ने भी तपस्विनी शबरी को शूद्रा अथवा भीलनी होने का कहीं सङ्केतमात्र भी नहीं दिया है । श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में भगवान् श्रीराम के वर्णाश्रमोक्त धर्मनियन्त्रित शासनतन्त्र का वर्णन मिलता है । " रामो विग्रहवान् धर्म : " (श्रीमद्वाल्मीकिरामायण ३।३७११३) के अनुसार

भगवान श्रीराम धर्म के साक्षात् मूर्तिमान् विग्रह हैं । " वेदप्रणिहितो धर्म : (श्रीमद्भागवत ६४०) के अनुसार वेदोक्त कर्तव्य हो धर्म है और तद्भिन्न अधर्म धर्मशास्त्र का महत्तम ग्रन्थ मनुस्मृति है , जो सर्वांशित : बदों के अनुकूल ही धर्म का प्रतिपादन करती है । भगवान् श्रीराम की शासनपद्धति का नियामकसाँवधान मनुस्मृति ही थी । भगवान् औराम ने श्रीमद्धाल्मीकीय रामायण ४२१८३० में स्वयं ही उद्घोष किया है सूचना गोती श्लोकी चारित्रवत्सली गृहोतो धर्मकुशलैस्तवा तच्चरितं मया ॥ मेरे पूर्वज धर्मप्राण श्रीमनुजी महाराज ने दो श्लोक कहे हैं , जिनका धर्मात्मा लोग पालन करते हैं , मन भी नुकूल ही आचरण किया है ।

मनुस्मृति ८३१६ और ३१८ वाले दो श्लोक जो भगवान राम ने कहे हैं . वे श्रीमद्वात्मीकीय रामायण से साम्य रखते हैं , ये ये हैं शामस्तेनाद्वमुच्यते राजा स्नस्थाप्नोति किल्बिषम् ॥ राजभिः कृतदण्डास्तु कृत्वा पापानि मानवाः निर्मला स्वर्गमायान्ति सतः सुकृतिनो यथा ॥ हो दो श्लोक स्वल्पान्तर में श्रीमद्वाल्मीकि रामायण ४२१८२३१-३२ में भी कहे गये हैं राजा कृत्वा पापानि मानव निर्मला स्वर्गमायाति सन्तः सुकृतिनो यथा ॥ शासनाद्वाऽपि मास्न पापात्प्रमुच्यते राजा यशाम पापस्य सदवाप्नोति किल्बिषम् ॥

(इन श्लोकों में ' स्तन ' शब्द अन्य सभी पापों का उपयुक्त पुरुषों को राजा द्वारा मृत्युदण्ड या अन्य भक्त दण्ड देने से मृतककल्प होकर बच जाने पर भी पापी लोग निर्मल होकर यथाकाल स्वर्ग को प्राप्त करते हैं पापी पुरुष प्रायश्चित्तरूप राजदण्ड भांगने से या शासनिकनिर्णय द्वारा छोड़ दिये जाने से भी पापमुक्त हो जाते हैं परन्तु यदि राजा अपराधी पर यथोक्त शासन नहीं करता तब उसका पाप राजा को ही लगता है भगवान् श्रीराम या महर्षि वाल्मीकि ने श्रीमी का नाम लेकर उनके सिद्धान्त को हो स्वल्पान्तर से अपनी शैली में कहा है । - पुनः भगवान् श्रीराम के द्वारा किसी के लिये करुणा और किसी के लिये दण्ड का विधान क्यों किया गया ? इसको समालोचना भी श्रीमद्राल्मीकिरामायण से ही करनी पड़ेगी , सभी धर्माचरणा शबरी के विषय में विश्वस्त निर्णय करने का अधिकार प्राप्त हो सकेगा ।

भगवान् श्रीराम का मर्यादापुरुषोत्तमत्व विश्ववित मर्यादा का उल्लङ्घन करनेवाले को वेदण्ड देते ही वह सर्वपूज्य ब्राह्मण अथवा अवध्या स्त्री ही क्यों न हो । भगवान् श्रीराम के बारे में वाल्मीकिरामायण २१२१४६ के अनुसार एक बात यह भी प्रसिद्ध है कि " इथेष नियमान कुष्यति " भगवान् श्रीराम धर्मशास्त्रीय नियम के अनुसार यथायोग्यों को बदण्ड भी देते हैं परन्तु अवस्या पर कभी क्रोध नहीं करते ।

यद्यपि रावण चारों वेदों एवं अन्य शास्त्रों का गम्भीर जाता ब्राह्मण था , परन्तु उसने ब्राह्मणत्व को मर्यादा का हनन किया था इसलिये भगवान् श्रीराम ने उसे वपदण्ड देकर उसका प्रायश्चित कर दिया । ताड्का एवं शूर्पणखा स्त्री थीं , परन्तु उन्होंने भी धर्म को मर्यारा का अतिक्रमण किया तो भगवान् श्रीराम ने उन्हें भी धोक्त एण्ड दिया हो आततायियों को तदनुकूल दण्ड देकर भगवान् औराम ने मनुस्मृति के ८१३५० बाल सिद्धान्त का हो संरक्षण किया आतताधिनमायानं हन्यादेवाविचारयन् ॥

गुरु वा बालवृद्धी वा बाह्मणं या गुरु हो हो बुद्ध हो अथवा बहुत विद्वान् ब्राह्मण ही क्यों न हो यदि यह धर्मविरोधी आततायी हो तो उसे बिना विचार किये ही वध या वचस्थानीय यथोक्त दण्ड दे देना चाहिये शास्त्रों में दण्डभेद से शस्त्रास्त्रययातिरिक्त कई प्रकार के अन्यान्य वदण्ड भी उल्लिखित हैं । में मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम ने शास्त्रविरुद्ध तपस्या में प्रवृत्त शम्बूक नामक डिजेतर को दण्ड दिया ।

शम्बूक द्वारा स्ववर्णधर्म से विरुद्ध तपारत होने के परिणामस्वरूप श्रीराम के धर्मनियन्त्रित शासन में भी एक ब्राह्मणवालक को अकालमृत्यु हो गई जबकि रामराज्य में ऐसा होना अतिशय चिन्तनीय था रामराज्य की व्यवस्था में पिता के लिये पुत्रशांक को उपस्थिति का प्रावधान नहीं था , उसमें भी उनके शासन में किसी स्वधर्मनिष्ठ ब्राह्मण को पुत्रमृत्युजन्य वियोग में करना पड़े भगवान् श्रीराम को यह सद्य नहीं था भगवान् श्रीराम ने विविध विधाओं से इस अनहोनी के कारण का पता लगाया और स्ववर्णधमांतिरिक्त कर्मों में प्रवृत्त शम्बूक को इसका कारण जानकर धर्मशास्त्रीय संविधानोक्त दण्ड दिया ।

श्रुतिस्मृति आदि में चतुर्थवर्ण के लिये सर्ववर्ण को परिचय का ही विधान है ओराम की उपजीव्य मनुस्मृति ११ ९ १ में " एकमेव तु शूदस्य प्रभुः कर्म समादिशत् एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया ॥ " , " तपः शूदस्य सेवनम् "

मनुस्मृति ११२३५) परिचर्याकर्म शूदस्यापि स्वभावजम् (१८४२) " शूदा स्वकर्मनिरतास्त्रीन् वर्णानुपचारिण : " (बा.रा. ११६११ ९) आदि में यही आदेश है । उपस्या तो ब्राह्मण का ही स्वाभाविक कर्म है मदमस्तपः शौचं स्वागत २८४२) श्रमात्मीकीय रामायण उत्तरकाण्ड ७६ वें एवं महाभारत शान्तिपर्व के १५३ अध्याय में और अन्यत्र भी इस प्रकरण का विशद वर्णन किया गया है । भगवान् मनु की बसाई आदिनगरी अयोध्या में मनुस्मृति के अनुसार कानूनव्यवस्था का होना स्वाभाविक था आज भी इसके बिना रामराज्य की कल्पना असम्भव है । कुछ महाशयों के द्वारा श्रीमाल्मीकीय रामायणान्तर्गत इन अध्यायों को क्षेपक कहना शास्त्रानभिज्ञता का परिचय देना है . इन अभ्यायों पर मान्य टीकाकारों ने टीकार्य भी की हैं ।

वर्णाश्रममर्यादा की रक्षा करते हुए भगवान् औराम सबको समान और करुणा की दृष्टि से देखते थे , उन्होंने अनेक स्वकर्मनिष्ठ शूद्रजातीय भक्तों को भी अतिशय सम्मान दिया है । शास्त्र की मर्यादा सबको अभ्युदय और निःश्रेयस प्रदान करती है , इसलिये रामराज्य में तो उसका पालन अनिवार्य ही था । इस प्रकार भगवान् श्रीराम ने पक्षपातरहित शास्त्रीय व्यवहार के द्वारा राजकीय नियमों का पालन किया , जो आवश्यक था रामराज्य का शाश्वत संविधान मनुस्मृति ९ ४२२४ के अनुसार श्रीराम जैसे मर्यादित राजा के द्वारा स्वधर्मभ्रष्ट प्रथा को दण्ड देना अनिवार्य था । उपस्थानिका कर्म है ,

सर्वसेवाधिकृत द्विजेतर का नहीं । पुनः शम्बूक की तपस्या से रामराज्य में भी ब्राह्मणचालकमृत्युरूप भयङ्कर अनर्थ उपस्थित हुआ और साध्यी शबरों की तपस्या से शबरीसहित ऋषियों का भी भगवदर्शनरूप महान् मङ्गल ही हुआ इससे भी स्पष्ट होता है कि शबरी शूद्रा नहीं थी , किन्तु ब्राह्मणी ही थी । वस्तुत : मनुस्मृति की मर्यादा के अनुसार चलनेवाले भगवान् श्रीराम ने अनधिकृतरूपेण तपोरत द्विजेतर शम्बूक को दण्ड दिया , पर उन्होंने तपोधना

शबरी से तपस्या की वृद्धि के बारे में पूछा- " कथिते वद्धतेतमः १ " " आहारश्च तपोधने (३४१८ - ९)

यहाँ शबरी को भगवान श्रीराम ने तपोधना ' कहकर आदर दिया है । यदि शबरी शूद्रा होती तो वर्णाश्रमधर्म का संरक्षण करनेवाले भगवान् श्रीराम उसे तपोधना या तापसी (३२७४११०) नहीं कहते पुनः इस प्रकरण में शबरी के लिये धर्मचारिणी , धर्मनिपुण , सिद्धा , धर्मसंस्थिता (३७४२६-७) और कृष्णाजिनधारण करने की अनधिकारिणी शोसतव्रता " शवरी शमितताम् " (३४३ ९) शबरी को " कृ " (३७४३२) आदि विशेषण नहीं दिये जाते । के धर्मशास्त्र एवं गृह्यसूत्रादि के अनुसार कृष्णाजिनधारण का अधिकार केवल ब्राह्मण को ही उपनयनप्रकरण के हरिहरभाष्य में स्पष्ट लिखा है " अजिनं धारयेद्रिप्र : " है । और पारस्करगृह्यसूत्र के ही हरभरूप संस्कारगणपति के पृष्ठ ६७० में भी विविध प्रमाणों से ब्राह्मणवर्ग को ही कृष्णाजिनधारण का अधिकारी सिद्ध किया गया है " ऐपोयमजिनमुत्तरोयं ब्राह्मणस्य गैरवणूजन्यावा वैश्यस्य सर्वेषावा गव्यमसति प्रधान " ब्राह्मणक्षत्रियविशां यथाक्रमेणैपोय गैरवमाज गव्यं वा भवति " , " ऐणेदन वाजिनेन ब्राह्मण रौरवेण # 1 वैश्यम् (आश्वलायनः) , " कृष्णाजिनं ब्राह्मणस्य सैवं क्षत्रियस्य तु वस्ताजिनं तु वैश्यस्य सर्वेषां गैरवाजिनम् ॥ " (मस्मृतिः) " निक्षिप्य सूत्रं वित्या प्रमा वाम स्थापच्या कृष्णाजिनम् ॥ (शौनकः) , " अंगुल वहिलोम या स्थाच्चतुरंगुलम् । अजिनं धाराष्टपर्श : ॥ " (रेणुरीक्षितकृतकारिका) आदि । शास्त्रानुसार वर्णाश्रमव्यवस्था के सम्मोपक स्पष्टवादी महर्षि वाल्मीकिजी भी किसी शूद्रा तपस्विनी के लिये ऐसे विशेषण कथमपि नहीं देते ।

महर्षित्व को प्राप्त श्रीमती के द्वारा भी उन्हें तापसी शिष्या के रूप में स्वीकार करने पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर सकता है । कदाचित् कुछ कल्पित कथानकों से कोई शबरी को शूड़ा हो सिद्ध करने का दुराग्रह करे तो पुनः प्रश्न उठता है कि

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम ने शूद्रा शबरी की तपस्या से आह्लादित होकर उन्हें महत्वपूर्ण दुर्लभ पुरस्कार देकर धन्यता प्रदान की और तारत द्विजेतर शम्बूकको वदण्ड तक दे डाला ऐसी असमानता समदर्शी भगवान् श्रीराम में भी क्यों ? इससे भी सिद्ध होता है कि किसी पक्ष में परिव्रजनकर्म की कदाचित् अधिकारिणी श्रीरामभक्ता शबरी ब्राह्मणी शूद्रा नहीं ।

श्रीमद्राल्मीकीय रामायणादि में शबरी का ब्राह्मणी सिद्ध करने के लिये एक अतिशय महत्त्वपूर्ण शब्द ' अमणी ' आया है . " अमणी शबरी नाम " (वा.रा. ३१७३२६) में अमणी ' शब्द का अर्थ सभी टीकाकारों ने तापसी ' या संन्यासिनी ' ही किया है । देखें " अपणोऽश्रमणः " , " तापसोऽतापस : " (बृहदारण्यकोपनिषद् [४१३१२२) यहाँ श्रीशङ्कराचार्यजी ने श्रमण परिवार संन्यासो , तापमानप्रस्थ अर्थ किया है । " बातरशनावानरीयारण्यक २ ९ ७१) , " कुमारश्रमणादिभिः " (पाणिनीयाष्टाध्यायी २११ ९ ७०) इत्यादि वचनों में श्रमण ' शब्द संन्यासी का हो याचक है । अब पुनः शास्त्रसिद्धान्त के अनुसार यह विचार किया जाय कि प्रवजन या संन्यासकर्म में किसका अधिकार है ? आज के परिवेश में किसी भी साधन से लौकिक सुख - सुविधामात्र को प्राप्त करनेवाले शास्त्रसिद्धान्तविहीन व्यक्तियों की बात छोड़ दी जाय और सनातन परम्परा से विचार किया जाय तो प्रव्रजन या संन्यासकर्म में केवल ब्राह्मण का ही अधिकार सिद्ध होता है , अन्यों का नहीं- " ब्राह्मण प्रजेत् (मनुस्मृति ६१२८) . " परिव्रज्याप्राप्तिह्मणस्यैव घोदिता (विष्णुस्मृति (५११३) . " ब्राह्मणस्याश्रमाश्याचार क्षत्रियस्याशास्त्रयः सूत्र १११११०-१२) . " चत्वार आपाते ब्राह्मणस्य सदैव हि । अन्येषामन्त्यहीन क्षत्रविरशूदकर्मणाम् ॥ (शुक्रनीति ४१३४०) , " वर्तवत्योऽन्यथा दया या वर्णाश्रमजातयः " (शुक्रनीति ४१३४२) यहाँ तो स्पष्ट हो ब्राह्मणेतर को संन्यासाश्रम ग्रहण कर लेने पर दण्ड का विधान किया गया है । अतः धर्मशास्त्रों में कहीं भी द्विजेतर के लिये संन्यासाश्रम का विधान नहीं है । इससे भी रामराज्य की तपस्विनी शवरी

का ब्राह्मणी होना निश्चित हो जाता है । यद्यपि कुछ धर्मशास्त्रकारों एवं धर्मशास्त्रीय निबन्धकारों ने कृतादि युगत्रण में द्विजमात्र के लिये लिङ्गरहितसंन्यास का विधान कर दिया है , तथापि उन्होंने भी कलियुग में " संन्यासप्रतिषेधस्तु

कली क्षेत्रविशोर्भवत् " (मलमासत्व) प्राह्मणातिरिक्त वर्णों के लिये संन्यास का निषेध कर दिया है । कलियुग में तो प्रायः शुद्ध वैराग्य नहीं होने के कारण शास्त्रों में ब्राह्मणों के संन्यासग्रहण में भी बहुत ऊहापोह की स्थिति है । इन प्रमाणों से भी यही सिद्ध होता है कि संन्यासिनी शबरी ब्रह्मणी ही थी , शूद्रा नहीं । अब पुनः शयरी के संन्यास पर विचार किया जाय तो स्त्री को भी संन्यास का अधिकार नहीं होता , अत : इसे गार्गी आदि ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी स्त्री की तरह अपवाद ही समझना चाहिये ।

कदाचित् ऐसे अपवादस्वरूप संन्यास का अधिकार प्राप्त करने पर भी स्त्रियों के लिये वेदाधिकारप्रद यज्ञोपवीत का धारण और वैदिकयज्ञों का विधान नहीं है , कदाचित कहाँ दिनंतर और पुरुपेतर का वेदश्रवण दोखे तो वहाँ " नाट्यसंज्ञमिमं वेदं सेतिहास करोम्यहम् " / 20 (१ ९ ५५) यशास्त्र अथवा पुराणेतिहासरूप पञ्चम वेद का हो अषण समझना चाहिये पुनः कई वैदिकसम्प्रदाय के संन्यासियों के लिये भी तो और अग्नियों का स्या हो विहित है स्त्रियों का विवाह ही उनका उपनयन होता है , अतः वैधव्य या पतिसम्बन्ध का त्याग कर देना ही उपनयनत्यागरूप संन्यास है । सर्वभूतदय धर्ममा स्वामी श्रोकरपात्रीजी महाराज ने अपने प्रसिद्ध और प्रौद्ध ग्रन्थ ' रामायणमीमांसा के पृष्ठ ४८८ एवं ४८ ९ में स्पष्ट ही लिखा है " बाल्मीकि रामायण के अनुसार शबरी एक धर्मचारिणी ब्राह्मणो अपणी थी ।

उसका शवरी केवल नाम ही था वह शवरजाति की भीलनी आदि नहीं थी और श्रमणी अर्थात् सिद्धा सिद्धसम्मता तापसी थी यत्र - तत्र शवरी को शवरजाति

का बताना और उसके द्वारा श्रीराम को जुठे फल देना आदि प्रामाणिक न होकर प्रेमस्तुप ही है । " अन्य विचारणीय पक्ष में भी यदि शबरी को भिल्लजाति की मान लो जाय , तो यह शूद्रवर्णान होकर अस्पृश्य अवर्ण या अन्त्यनों में चाण्डाल या म्लेच्छ मानी जायगी व्यासस्मृति १ ९१२-१३ आदि में शबर या भिल्लजाति को अन्त्यजों में गिना गया है । ' '
निषादश्वपचावन्तेवासिधाणहालपुक्कसा : । भेदाः किरातशवरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ " (अमरकोश (२ (२०२०) , " स्त्रीशूदहणशवरा अपि पापजीवा : " (श्रीमद्भागवत २२७१४६) में भी शूह से पृथक् हो शबरजाति को रखा गया है और वह अस्पृश्य चाण्डाल है अतः जो श्रीरामभक्ता शबरी को शूद्रा कहते हैं उन्हें धर्मनिपुणा तपस्विनी शबरी को अस्पृश्या चाण्डाली या म्लेच्छा हो कहने के लिये बाध्य होना पड़ सकता है परन्तु ऐसा नहीं है भगवान श्रीराम ने शबरी के स्पर्श को और उनके द्वारा प्रदत्त जलानमन आदि को सहर्ष स्वीकार किया ।

यहाँ यदि यह शङ्का हो कि भगवान् श्रीराम ने निषादराज गुह का आलिङ्गन किया , जो अमरकोश २।१०।२० के अनुसार चाण्डाल की श्रेणी में आता है , तब चाण्डाली शबरी के चरणस्पर्श में आपत्ति क्या ? इसका समाधान है निषाद दो प्रकार का होता है अनुलोमन और प्रतिलोमज प्रतिलोमज निषाद चाण्डाल एवं अस्य होता है , अनुलोमज नहीं अनुलोमज निषाद का दूसरा नाम ' पारशव ' है और वह नौकाजीबी होता है (मनुस्मृति १०१८ , २०३४) , बाल्मीकि रामायण के अनुसार भी वह नौकाजीबी ही है । रामायणीय निषाद अनुलोमज होने से स्पृश्य है , अस्पृश्य प्रतिलोमज नहीं । तथापि भगवान् श्रीराम ने बा .. २१५०१४३ के अनुसार निषाद से कोई वस्तु नहीं ली यत्त्विदं भवता किया समुपकल्पितम् सर्वजानामि नहि वर्त प्रतिग्रहे ।। औराम ने निषाद से कहा- तुमने जो कुछ दिया है , उसका तिरस्कार तो नहीं करता परन्तु उसे से नहीं सकता ' नहि बर्त प्रतिग्रहे ' एवं वा.रा. २१५०१४३ के अनुसार लक्ष्मणजी से

जल - फल मँगाकर ग्रहण किया । इधर भगवान् श्रीराम ने तो शबरी का जल , फल एवं आचमन भी स्वीकार किया , इससे भी शबरी का ब्राह्मणी होना ही सिद्ध होता है । श्रीगोविन्दराज ने याविन्यम् " बा . रा . ३७४१७ की व्याख्या में पद्मपुराण का वचन उदत कर कहा है फलानि च सुपक्वानि मूलानि मधुराणिय स्वयमासाद्य माधुर्य परीक्षा परिक्षयच ॥ पश्चान्त्रिवेदयामाम राघवाभ्यां दुखता फलान्यास्वास काकुत्स्वस्तस्यै मुक्ति परां ददौ ॥ शबरी ने पूर्व से ही अन्य फल - मूलों के माधुर्य का स्वयं परीक्षण करके श्रीराम लक्ष्मण को मधुरातिमधुर फल - मूल समर्पित किया और दोनों भाइयों ने प्रेम से उनका आस्वादन कर उस तापसी को परमपद मुक्ति प्रदान की पद्यपि अन्तःप्रेम की विहुलता में कदाचित् विधि - निषेध कुण्ठित भी हो जाया करते हैं तथापि यहाँ शबरी के द्वारा ओराम - लक्ष्मण को उच्छिष्ट खिलाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती परन्तु इस वाक्य को आधार बनाकर कुछ साहित्यकारों ने श्रीराम लक्ष्मण के उच्छिष्टमक्षण की ऊँची उड़ानें भर दी है ।

16 .. यद्यपि भगवान् श्रीराम को अधमोत्तम जात्यादि से विरोधानुरोध नहीं है " मानहुँ एक भगति कर नाता " से निश्छल प्रेम के वशीभूत है तथापि वे मनुस्मृति के अनुसार वर्णाश्रममयांदा का पालन करने में प्रमाद नहीं करते थे पुनः भगवान् ही सभी जीवों के अन्तःकरण में सप कुछ के भोक्ता है , तथापि महर्षि वाल्मीकि वर्णाश्रम की मर्यादा के परिपोषक के रूप में एक दिव्य महामानव का ही चरित्रचित्रण कर रहे हैं । इसमें भगवान श्रीराम का किञ्चित् भी प्रमाददर्शन सम्भव नहीं ।

अनेक दृष्टियों से श्रीरामभक्ता शबरी शबरजाति की न होकर कंचल शबरी नाम वाली ब्राह्मणी मी यहाँ सिद्ध होता है । रामायण में निषाद एक जाति का नाम है , पात्र का नाम गुह है ; अब शबरीशब्द यदि जातिनाम माना जाय तो उस श्रीरामभक्ता का नाम क्या ? ऐसे नाम के अन्य भी अनेक उदाहरण है ; यथा (

१) मौमांसादर्शन के प्रौतम भाष्यकार मैथिलमनीषी महापण्डित औशवरस्वामी जिनके उच्चकोटि के स्वकर्मनिष्ठ ब्राह्मण होने में कोई सन्देह नहीं है । अद्यपर्यन्त किसी अन्वेषक ने नाममात्र से ही उन्हें ल्या चाण्डाल सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया है । (२) स्कन्दपुराण के महेश्वरखण्डान्तर्गत कंदारखण्ड (३५/१२) म एवमुक्त्वा तदा देवी गिरिजा सर्वमङ्गलाशयमाथाय गनुकामा महेश्वरम् ॥ भगवती गिरिजादेवी भी शबरों के रूप में प्रकट हुई हैं . प्रबद्धो हि महादेव निरीक्ष्य शबरों तदा (३५११८) , " उवाच वाक्यंशव प्रस्ताव सदृशं महत् " (३५१२२) आदि स्थलों में भगवान् शिव ने ही शबरी को चराहा बनना , अरण्यवासिनी , धर्मप्राणा , भामिनी , तपस्विनी , विशालाक्षी और सुमध्यमा आदि कहकर सम्बोधित किया है जिनकी उपासना आज भी दक्षिणभारत आदि में बड़ी हो श्रद्धा से की जा रही है । यहाँ पर शबरीरूपधारिणी भगवती गिरिजा शवरजाति वाली चाण्डाली सिद्ध नहीं हो सकती ।

(३) तन्त्रशास्त्र के मान्य ग्रन्थ ' आगमरहस्यम् ' के भैरवप्रोक्त ' औरेणुकास्तोत्र ' में भिल्ली शबरी के रूप में भगवती रेणुका का ध्यान किया गया है मध्ये बद्धमयूरपिच्छनिक श्याम मुझनुश्रा नलाम्बरामराम् शुङ्गीवादतपसुनयनांमुढोलकवर्ध नमामि शबरी खाकवीरां पराम् ॥ मङ्गवेगनचलती शनैः । लोलल्यिा लोलावं ता ववर्ति सर्वायदा | यहाँ पर भी भिल्ली शबरी के वेष में बन में निवास करनेवाली भगवती एकवीरा रेणुका काही वर्णन प्राप्त होता है । केवल शबरी नाम और बेषवाली होने से भगवती एकवीरा या रेणुका शवरजाति की अन्त्यजा कहीं भी नहीं बताई गई है । जैसे किरात या भिल्ल के वेष में कुछ समय व्यतीत करने पर भी श्रीमाल्मीकीय रामायण के कर्ता महर्षि वाल्मीकि किरात या भिल्ल सिद्ध नहीं हो सकते , जन्मना ब्राह्मण होने के कारण कालान्तर में भी ये ब्राह्मण ही रहे ।

(४) पुनः श्रीमहासरस्वतीसहस्रनामस्तोत्रम् के १० श्लोक में भी भगवती महासरस्वती का एक नाम ' शबरी ' आया है शिवेतन शव गुणान्विता " इनमें से किसी भी स्थल में शबरी नाममात्र उपलब्ध होने से इन महादेवियों को रावरजाति की चाण्डाली कह देना अक्षम्य अपराध है ।

स्त्रियो वैश्यास्तथा शूदा " , पुनरपि एक प्रश्न होता है- शबरी यदि ब्राह्मणवर्ण की है तो उसे कहीं - कहीं ' अधमजन्मा ' , ' जातिहीना ' , ' ना ' , ' अपजन्म ' आदि कयों कहा है ? इसका समाधान भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता ९ ३२ में किया है " वेऽपि स्युः [पाययोनयः श्रीमद्भागवत २२७१४६ में " सोशूदहणशवरा अपि तथा इसी का अनुवाद गोस्वामिपाद श्रीतुलसीदासजी ने सर्वजनप्रिय औरामचरितमानस में शबरी के द्वारा ही " अधम ते अथम अथम अति नारी स्पष्ट किया है पचीत की अनधिकारिणी होने से हो उसे कहाँ ' शूद्रा ' , कहाँ ' शूद्रसदृशी ' और कहाँ ' होनवण ' आदि कहा गया है । इसी रीति से शबरी के लिये प्रयुक्त आदि का समाधान हो जाता है । अध्यात्मरामायण में भी शबरी ने स्वयमेव " योधिन् होनजातिसमुद्भवा " कहा है । तैत्तिरीयसहिता ६५८२ के अनुसार ब्राह्मणोपस में भी शबरी को अपजन्म ' कहा जा सकता है गोविन्दराज ने ३५ श्लोक की व्याख्या " वियामपि विदुरादेखि योगाधिकार [सम्भवति तदङ्गयज्ञादिकमंस्थाने गुरुशुश्रूषा स्वर्गश्चादी अक्षयानित्युक्त्या पुनरावृत्तिरहिनं परमपदमित्यवगम्यते न शयरी को शूद्रा न कहकर वही कहा है भगवान् श्रीराम के विज्ञाने वा.रा. ३७४१ ९ में शबरी को ' विताना भी कहा है , जिसका अर्थ तिलक , शिरोमणि , तीर्थ , भूषण , कतकादि टीकाकारों ने मैत्रेयादि के समान ब्रह्मविद्याधिकारिणी ' किया है तो नित्यम् अवहिष्कृत भोजनादिव्यवहारात् । सदमाहारा से भी शबरी के भोजनादिव्यवहारयोग्या होने से भगवान् श्रीराम में प्रद आहारादि को स्वीकार किया । इससे भी शबरी के ब्राह्मणी होने की ही पुष्टि होती है ।

प्रकरणवशात् पुनः एक प्रश्न उठता है कि वर्णाश्रम की मर्यादा का पालन करनेवाले क्षत्रियकुलोत्पन्न ब्राह्मणभक्त भगवान् श्रीराम ने वृद्धा ब्राह्मणी शबरी से पादस्पर्श कराया ही क्यों ? इसका स्पष्टीकरण है- शबरी को पूर्व में ही गुरुकृपा से औराम के ब्रह्मादिवन्दितपद भगवत्स्वरूप और उनके आश्रमसमागमन का ज्ञान हो गया था . शबरी भगवर्शन के लिये हो प्राणधारण कर रखी थी . भगवान् श्रीराम ने भी शबरों के दिव्यान्तभाव को समझकर उसे

मुनिगणदुर्लभ परमपद " तद्विष्णोः परमं पदम् स्वधाम प्रदान कर दिया । भगवद्भाव में यह शङ्का इसलिये भी निर्मूल हो जाती है कि नहीं चाहते हुए भी सर्वोद्धारक भगवान् श्रीराम ने पूर्ववृत्तानसार सर्वविदित ब्राह्मणी अहल्या का उद्धार करने के लिये स्वयमेव अपना जगत्पावन पादस्पर्श प्रदान किया था सर्वत्र परममङ्गल ही मङ्गल हुआ ।

पुनः शबरी के लिये अमजोविनो ' शब्द भी उसे शूद्रा सिद्ध करने में समर्थ नहीं , " श्रमस्तपसि खेदे च " इस कोष के प्रमाण से तथा " अमु तपनि खेदे च " इस दिवादिगणीय धातुपाठ में कहे हुए अर्थविशेष से ' श्रमजीविनी ' का ' तपस्विनी ' अर्थ में पर्यवसान हो जाता है । इसी का अन्य पर्याय अमणी ' भी प्रसिद्ध है " तपसा श्राम्यतीति श्रमणा " (तिलक ११११५६) । इस प्रकार विविधविध आम्रेइन से श्रीमदाल्मीकिरामायण के अनुसार ' शबरी ' उसका नाम और ' ब्राह्मणी ' उसकी जाति सिद्ध हुई । शबरीविषयक इतिहासों को प्रामाणिक रामायणों के अनुकूल ही प्रकट करना उत्तम है । आनन्दरामायण राज्यकाण्ड के ३१४४ में भी " नसा दासो (शूदा) तु शयरी मुनिसेवनतत्परा " जिसे तुम दासी कहते हो , वह दासी नहीं अपितु मुनियों की सेवा में तत्पर शबरी थी । भक्तिमार्ग के कई अर्वाचीन ग्रन्थों में तो राग - द्वेषवशात् द्विजेतर लेखकों एवं कुछ द्विजा ने भी द्विजेतरों में भक्तिभाव प्रसारित करने अथवा

द्विजों को अपकृष्ट सिद्ध करने के उद्देश्य से प्रामाणिक ग्रन्थों के विरुद्ध कई प्राचीन भक्तों को चाण्डाल , अन्त्यज आदि कह डाला है । श्रमद्भागवतादि के विरुद्ध ' ब्राह्मण अजामिल ' को भी अन्त्यक्ष लिख दिया है ।

मन्वादि धर्मशास्त्रों का तिरस्कार कर भक्ति के अर्थवादस्वरूप वहाँ भगवद्भक्त अन्त्यजों का उच्छिष्ट दिनों को भी खिलाया गया है । अतः ऐतिहासिक तथ्यों के प्रकटीकरण में उन ग्रन्थों का अव्याहत प्रामाण्य अस्वीकार्य है । वहाँ शबरी को भीलनी या शूद्रा बताना भी वाल्मीकिरामायण के विरुद्ध है । " येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् " से प्रसिद्धि प्राप्त करनेवाले का अनुसरण नहीं करना चाहिये । पुनः शास्त्रश्रमपूर्वक इन्हीं पवित्रस्थलों से औरामभक्ता भगवती शबरी के मूलस्वरूप और परिचय को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये प्रत्यक्षतः भी धर्मप्राण भारतवर्ष में शबरीमाता के कई बई विशाल मन्दिर भी हैं ही , और वहाँ शबरीमाता भगवती के रूप में ही पूजित हो रही हैं ।

औरामभक्ता शबरी का स्वरूप अन्यान्य प्रामाणिक अप्रामाणिक रामायणादि में भी उपलब्ध है , जिसका अवलोकन अनिवार्य है । महाकवि क्षेमेन्द्र ने अपने महाकाव्य रामायणमञ्जरी के शबरीदर्शन नामक ३१ वें प्रकरण में श्रीरामभक्ता पूज्या शबरी का चित्रण किया है । जब भगवान् श्रीराम श्रीजानकीजी के विरह से व्याकुल हो रहे थे , तभी उन्होंने माता शबरी का दिव्यदर्शन किया , वह प्रकरण मननीय है । ४० सहस्र पृष्ठों वाले श्रीसनातनधर्मालोक के यशस्वी लेखक सनातनशास्त्रनिष्ठ महाविद्वान् श्रीदीनानाथजी सारस्वत ने इस विषय का विस्तृत विवेचन किया है । अन्यान्य सनातनी महानुभावों के भी विचार उपलब्ध हैं ।

इस निबन्ध के लिये मैंने यथासाध्य एतद्विषयक यथोपलब्ध अधिकाधिक प्राचीन अर्वाचीन संस्कृत एवं हिन्दी की रामायणों , रामकथाओं तथा अन्यान्य

छप्पय दोहे , कविता , गीत आदि का अवलोकन किया है । विस्तृत विश्लेषण पुस्तक के रूप में प्रकाशित होगा । सनातनशास्त्रसिद्धान्तनिष्ठ महानुभाव राग - द्वेपरहितबुद्ध्या मेरे यथार्थान्वेषण से लाभ ले सकते हैं तो लें और धर्मशास्त्रीय युक्तिपूर्ण विचार भी प्रदान करें । अनधिकारियों के वितण्डापूर्ण निरर्थक प्रवादों का कोई सम्मान नहीं । मेरे लेख केवल प्रौदसाहित्य और सनातनसंस्कृतिप्रेमियों के विचारार्थ या ग्रहणार्थ ही प्रकाशित होते हैं , प्रदूषित बुद्धिवाले दूर हो रहें तो अच्छा है अन्यथा अपच हो जायगा ।

॥ श्रीराम जय राम जय जय राम ॥

।। हर हर महादेव ।।